समस्या भारत तक ही सीमित नहीं

वर्ल्ड इकॉनमिक फोरम (डब्ल्यूईएफ) के ताजा सर्वे में इसे दुनिया के सामने अगले 10 वर्षों की सबसे बड़ी चिंताओं में पहले स्थान पर पाया गया है। सर्वे में 127 देशों के 12,012 बिजनेस लीडर्स को शामिल किया गया।

आरती सिंह।।

देश में बेरोजगारी का बढ़ा हुआ स्तर हमारे लिए गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है, लेकिन यह समस्या भारत तक ही सीमित नहीं है। वर्ल्ड इकॉनमिक फोरम (डब्ल्यूईएफ) के ताजा सर्वे में इसे दुनिया के सामने अगले 10 वर्षों की सबसे बड़ी चिंताओं में पहले स्थान पर पाया गया है। सर्वे में 127 देशों के 12,012 बिजनेस लीडर्स को शामिल किया गया। यह सर्वे डब्ल्यूईएफ की उस ग्लोबल कॉम्पिटिटिव रिपोर्ट का हिस्सा है जिसे अगले महीने रिलीज किया जाना है। दिलचस्प बात है कि इस सर्वे में आतंकवाद को दुनिया के सामने मौजूद दस सबसे बड़ी चुनौतियों में भी जगह नहीं मिली है। साफ है कि हमारा देश भले दुनिया के उन कुछेक देशों में है जो आतंकवाद से लगातार जूझ रहे हैं, लेकिन दुनिया के स्तर पर इस समस्या को काफी हद तक हल हुआ मान लिया गया है, या कम से कम इसे सबसे बड़ी चिंताओं में शामिल होने लायक नहीं माना जा रहा।

चिंताओं की प्राथमिकता में वित्तीय संकट, साइबर हमले और सामाजिक अस्थिरता भी हैं, लेकिन बेरोजगारी के बाद जो दूसरा सबसे बड़ा खतरा इन बिजनेस लीडर्स को डराए हुए है, वह है संक्रामक बीमारियों का फैलाव। अभी की स्थितियों को देखते हुए पहले तो कोरोना वायरस के जाने को लेकर ही दुविधा बनी हुई है। फिर उसके आगे यह आशंका भी निराधार नहीं है कि आने वाले समय में ऐसे अन्य रोगाणुओं के हमले भी मनुष्यों को झेलने पड़ें। बहरहाल, यह बात भी ध्यान देने लायक है कि बेरोजगारी और महामारी की ये दोनों बड़ी चिंताएं एक–दूसरे से उतनी अलग नहीं हैं। बेरोजगारी के अप्रत्याशित रूप से बढ़ने के पीछे कोरोना वायरस का फैलाव रोकने के लिए किए गए लॉकडाउन का सीधा हाथ है। इसके अलावा ऑटोमेशन और ग्रीन इकॉनमी की तरफ बढ़ने से भी रोजगार के कई स्रोत समाप्त हुए हैं या कमजोर पड़े हैं।

इस संदर्भ में ऑक्सफैम और डिवेलपमेंट फाइनेंस इंटरनैशनल (डीएफआई) की ताजा रिपोर्ट भी गौर करने लायक है जिसमें कहा गया है कि अभी की तबाही को हम पूरी तरह से प्रकृति के मत्थे मढ़कर निश्चिंत नहीं हो सकते। रिपोर्ट के मुताबिक, वायरस भले मानव निर्मित न हो, पर जो कहर इसने दुनिया भर में ढा दिया उसके लिए हमारी सरकारों की गलत प्राथमिकताएं जिम्मेदार हैं। सरकारों ने स्वास्थ्य के मद में खर्च करने में लगातार कंजूसी बरती। वे 'सिक पे' जैसी सहूलियतों के जरिए अपनी श्रम शक्ति को सुरक्षा देने में नाकाम रहीं।

'कमिटमेंट टु रिड्यूसिंग इनइक्वलिटी इंडेक्स' (सीआरआईआई) के आंकड़ों के मुताबिक 158 देशों में से केवल 26 को छोड़ दें तो स्वास्थ्य पर बजट का 15 फीसदी खर्च करने की सिफारिश किसी भी सरकार ने स्वीकार नहीं की। भारत में तो कोरोना से ठीक पहले तक स्वास्थ्य सेवाओं पर बजट का मात्र 4 फीसदी खर्च होता था। नतीजा यह है कि हमारी गिनती आज दुनिया के सबसे ज्यादा कोरोना प्रभावित देशों में हो रही है।

महत्वपूर्ण बात

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

थोडा सा ज्यादा करने की कोशिश करे। जो एक साधारण इंसान कभी नही करता। किसी भी दिन घर से बाहर पहला कदम रखने से पहले आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यही होती है की अपने दिन का सामना करने के लिए आप किस रवैये को अपनाते है। नकारात्मक रवैया आपके दिन को बुरा, बहुत बुरा बना सकता है। लेकिन एक सकारात्मक रवैया आपके जीवन में अच्छे और महान विचारो की वर्षा कर सकता है। इसीलिए हमेशा घर से बाहर निकलने से पहले अपने रवैये को निश्चित कर ले, क्योकि जितना अच्छा रवैया आप अपनओंगे, उतना ही अच्छा आपका दिन होंगा। जहा दुनिया में लोग सबसे सरल, तेज और आसान रास्ता अपनाकर सफल बनना चाहते है वही आपको मुश्किल से मुश्किल रास्तो को अपनाकर सफल बनने की कोशिश करनी चाहिये।

संपादकीय

चीनी सहारा कब तक

इमरान सरकार और फौज के खिलाफ यह जन–आंदोलन उस दौर में तेज हो रहा है, जबकि पाकिस्तान अपने जन्म के बाद सबसे गहरे संकट में फंसा हुआ है। कोरोना की महामारी ने उसको त्रस्त कर ही रखा है, इसके अलावा उसकी आर्थिक स्थिति भी बिगड़ती जा रही है। सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात ने भी उसे ठेंगा दिखा दिया है। अमेरिका ने अपना हाथ खींच रखा है। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय टास्क फोर्स का शिकंजा उस पर कसता चला जा रहा है। अकेला चीन इस लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था को कब तक टेका लगाएगा? यदि इमरान सरकार संयम से काम नहीं लेगी और फौज के इशारों पर नाचेगी तो यह असंभव नहीं कि उसके गठबंधन में शामिल पार्टियां उससे किनारा करने लगें। इमरान सरकार ने इस आंदोलन को कुचलने के लिए कमर कस ली है। उसने नवाज शरीफ को लंदन से वापस लाने के लिए ब्रिटिश सरकार के दरवाजे खटखटाने शुरू कर दिए हैं। पूर्व राष्ट्रपति आसिफ जरदारी को अदालतों ने भ्रष्टाचार के दो नए मामलों में फिर से फंसा दिया है। वे पहले छह महीने की जेल काट चुके हैं। नवाज शरीफ के छोटे भाई शाहबाज शरीफ, जो पंजाब के मुख्यमंत्री रह चुके हैं, को भी सींखचों के पीछे डाल दिया गया है। नवाज की उत्तराधिकारी, उनकी बेटी मरियम को दुबारा जेल भेजने की तैयारी है। कोई आश्चर्य नहीं कि शीघ्र ही कुछ सिंधी, बलूच और पख्तून नेताओं को भी धर दबोचा जाए। अगले कुछ महीनों में जबर्दस्त खूंरेजी पाकिस्तान में हो सकती है। इसका नतीजा यह भी हो सकता है कि इमरान सरकार के संसद में गिरते ही पीछे छिपी फौज एकदम आगे आ जाए और पाकिस्तान एक बार फिर फौज के बूटों तले सीधा रौंदा जाए।

इमरान सरकार के खिलाफ 'पाकिस्तान पीपल्स पार्टी' के नेता बिलावल भुट्टो ने जिहाद छेड़ दिया है। बिलावल की पहल पर पाकिस्तान के लगभग सभी प्रमुख विरोधी दल एकजुट हो गए हैं।

बिलावल की पहल

वेदप्रताप वैदिक।।

पाकिस्तान की राजनीति अब फिर से गरमा रही है। जैसी उथल–पुथल हमने जनरल अयूब खान, याह्या खान और परवेज मुशर्रफ के खिलाफ कभी पाकिस्तान में देखी थी, लगभग वैसी ही उथल–पुथल की संभावनाएं अब बन रही हैं। पाकिस्तान की नौ प्रमुख पार्टियां एकजुट हो गई हैं। और एक साथ आकर वे किसी फौजी तानाशाह को हटाने के लिए कमर नहीं कस रही हैं बल्कि पाकिस्तान की फौज के खिलाफ ही उन्होंने नारा बुलंद कर दिया है। ये वे पार्टियां हैं, जिनके नेता पाकिस्तान के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री रह चुके हैं। अभी पाकिस्तान में कोई फौजी तानाशाह काबिज नहीं है बल्कि चुनाव में जीता हुआ एक नेता प्रधानमंत्री है, जिसका नाम है– इमरान खान। इमरान खान पर विरोधी दलों का आरोप है कि पाकिस्तान की फौज ने उन्हें अपनी तिकड़म से चुनाव जिताया है और गद्दीनशीन किया है।

2018 के आम चुनाव में इमरान की पार्टी 'पाकिस्तान तहरीके–इंसाफ' को कुल वोटों के एक–तिहाई वोट मिले लेकिन 149 जीती हुई सीटों के कारण वह सबसे बड़ी पार्टी बन गई और उसने एक गठबंधन सरकार खड़ी कर ली। इमरान सरकार के खिलाफ 'पाकिस्तान पीपल्स पार्टी' के नेता बिलावल भुट्टो ने जिहाद छेड़ दिया है। बिलावल की पहल पर पाकिस्तान के लगभग सभी प्रमुख विरोधी दल एकजुट हो गए हैं। इन पार्टियों के संयुक्त सम्मेलन में लंदन से भाषण देते हुए पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने फौज पर जैसा हमला बोला, वैसा आज तक पाकिस्तान में किसी बड़े नेता ने नहीं बोला था।

अभी तक पाकिस्तान के नेता कभी फौज का नाम लेकर उसकी आलोचना नहीं करते थे। पाकिस्तान में फौज को नेता और पत्रकार अक्सर 'प्रतिष्ठान' या 'एस्टैब्लिशमेंट' कहकर संबोधित करते हैं, या यह भी कहते हैं कि वह 'सरकार' के अंदर सरकार' है। लेकिन नवाज शरीफ ने अपने संबोधन में नया मुहावरा गढ़ दिया। उसे 'सरकार के ऊपर सरकार' कहा। नवाज शरीफ ने यह भी कहा कि विपक्ष की लड़ाई इमरान खान से नहीं बल्कि उस फौज से है, जिसने इमरान खान को गद्दी पर लाद रखा है। इमरान खान के विरुद्ध छेड़े हुए संग्राम का अर्थ अब होगा, पाकिस्तानी फौज के विरुद्ध सीधा संग्राम।

इसकी एक बानगी तो इसी घटना से मिली कि पाकिस्तान के सेनापति कमर जावेद बाजवा की अकूत संपत्तियों की जांच की मांग खुलेआम की जा रही है। सेना की व्यापारिक गतिविधियों और भ्रष्टाचार पर विरोधी नेता जमकर बोल रहे हैं। विरोधी नेताओं के ऐसे बयानों को इमरान सरकार के मंत्री देशद्रोह की संज्ञा दे रहे हैं। पाकिस्तान में फौज के विरुद्ध जुबान खोलना देशद्रोह क्यों माना जाता है? इसके पीछे धारणा यह है कि यदि फौज है तो पाकिस्तान है। यदि फौज हाशिये में रहे, जैसे कि वह अन्य देशों में रहती है, तो पाकिस्तान बिखर जाएगा। पाकिस्तान दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है, जो मजहब के आधार पर बना है। यह फर्जी आधार सिर्फ डंडे के जोर पर ही जिंदा रह सकता है।

मजहबी आधार फर्जी होता है, इसीलिए बांग्लादेश पाकिस्तान से अलग हुआ। आज भी पाकिस्तान में सिंधी, बलूच, पख्तून और कश्मीरी अपने अलग राष्ट्र की मांग क्यों कर रहे हैं? पाकिस्तान में यों तो अयूब, याह्या, जिया और मुशर्रफ जैसे फौजियों का राज लंबे समय तक रहा लेकिन जब गैर–फौजी नेता प्रधानमंत्री रहे, तब भी देश की असली ताकत फौज के हाथों में ही रही।

सूडोकु नवताल- 5499

कठिनतम

			4		6			
					2	7		
	6	8				9		
5	3							6
				6				
7							9	2
		9				8	5	
		2	1					
			3		4			

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5498 का हल

2	9	7	1	3	6	4	8	5
3	1	6	5	8	4	2	9	7
5	4	8	7	9	2	6	3	1
9	2	1	4	7	3	8	5	6
7	8	3	6	1	5	9	2	4
4	6	5	9	2	8	1	7	3
1	7	4	2	5	9	3	6	8
6	3	2	8	4	7	5	1	9
8	5	9	3	6	1	7	4	2

अपना ब्लॉग

श्रम सुधारों के तहत ऐसे कदम

मोहन। फौज के इशारों पर ही अदालतों ने जुल्फिकार अली भुट्टो, नवाज शरीफ और गिलानी जैसे प्रधानमंत्रियों को मुजरिम बनाया। अब फौज के खिलाफ युद्ध की जो घोषणा हुई है, क्या वह सफल हो पाएगी? अभी जो तहरीके–जम्हूरियत बनी है, उसका नेता मौलाना फजलुर रहमान को बनाया गया है। वे जमीयते–उलेमा–इस्लाम के मुखिया हैं और पिछले साल उनकी पार्टी के प्रदर्शनों ने सरकार की नाक में दम कर दिया था। पाकिस्तान की राजनीति में मजहब की जबर्दस्त भूमिका को देखते हुए यह माना जाएगा कि एक मौलाना के नेतृत्व में कोई भी आंदोलन काफी लोकप्रिय हो सकता है। मौलाना अपने इस बहुदलीय आंदोलन को क्वेटा से छेड़ेंगे। सरकारी मंत्रियों का कहना है कि यह मौलाना अफगान आतंकवादियों का संरक्षक है और यह सेना का विरोध करके भारत की मदद कर रहा है।